UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

दक्षिणी अफ्रीका में महात्मा गाँधी

डॉ.विद्वेश कुमार

प्रवक्ता नागरिकशास्त्र, जनता इंटर कॉलेज, फलावदा,मेरठ

अन्याय के विरूद्ध सत्य, अहिंसा तथा सहिष्णुता के सिद्धान्त से अल्बर्ट आइंस्टीन, मार्टिन लूथर किंग II, दलाई लामा तथा नेलशन मण्डेला जैसे लोगों को प्रेरणा देने वाले मोहनदास करमचन्द गाँधी भगवान बुद्ध के पश्चात् प्रसिद्धि पाने वाले पहले व्यक्ति थे।[1] महात्मा गाँधी के वक्तव्य, भाषण, लेख और पत्रों का प्रकाशन लगभग तीन करोड़ शब्दों में है। मानव इतिहास में उन पर सबसे ज्यादा साहित्य लिखा गया। गाँधी जी पर लगभग पांच हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें से करीब एक हजार तो सिर्फ इंग्लैन्ड में प्रकाशित है। गाँधी जी पर उपलब्ध इस विपुल साहित्य को गाधियाना कहा गया है।[2]

प्रख्यात इतिहासकार एवं गाँधी जी के जीवनीकार रामचन्द्र गुहा को उनके एक दक्षिणी अफ्रीकी मित्र द्वारा गाँधी जी के सम्बन्ध में लिखा गया कि आपने हमें एक वकील दिया, हमने आपको एक महात्मा लौटाया। यह कथन गाँधी जी की जीवन यात्रा के उस महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है, जिसमें उनका व्यक्तित्व परिवर्तन एक वकील से अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध नैतिक आधार पर लड़ने वाले संत योद्धा के रूप में होता है। यह कथन इस बात का भी द्योतक है कि जिन सिद्धान्तों, आदर्शों पर चलकर गाँधी जी ने भारत को अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतन्त्रता दिलवायी उन सिद्धान्तों एवं आदर्शों की पृष्ठभूमि में दक्षिणी अफ्रीका है। ये सत्य एवं अहिंसा के वे सिद्धान्त एवं आदर्श थे जिनके द्वारा महात्मा गाँधी ने अफ्रीका के नटाल एवं डरबन नामक प्रोविंस में भारतीयों एवं एशियाई लोगों को ब्रिटिश अन्याय एवं शोषण से मुक्ति दिलाने में सफल आन्दोलनों का संचालन किया। प्रस्तुत लेख में दक्षिण अफ्रीका की पृष्ठभूमि में गाँधी के आरम्भिक संघर्ष एवं उनके आदर्शों एवं सिद्धान्तों को आकार देने वाले कारकों को रेखांकित किया है।

अफ्रीका में व्यतीत किया गया समय गाँधी जी के जीवन का सर्वाधिक प्रभावशाली समय था। यहाँ रहते हुए ही उन्होंने वे नैतिक योजनाएँ बनायी जिनके कारण भविष्य में उन्हें वैश्विक प्रसिद्धि मिली। 24 वर्ष की आयु में एक वकील के रूप में अपने भविष्य की शुरूआत करने हेतु

1893 में अफ्रीका के नटाल प्रांत गये और 1915 में 45 वर्ष की आयु में सदा के लिए भारत आ गये।

1893 में जब गाँधी अफ्रीका में ब्रिटिश प्रांत नटाल गए, तब वहाँ के अंग्रेज भारतीयों एवं अन्य एशियाई लोगों को वोट के अधिकार से वंचित करने हेतु प्रयासरत थे। चूंकि 1892 में दादा भाई नोरोजी प्रथम भारतीय के रूप में इग्लैण्ड में कॉमन सभा के लिए लंदन के 'फिन्सबरी' चुनाव क्षेत्र से चुन लिए गए थे। अतः अंग्रेज यह सोचने लगे कि यदि भारतीय ब्रिटिश संसद के कॉमन सभा सदन हेतु चुने जा सकते हैं, तो नटाल जैसे प्रांत में जहाँ भारतीय एशियाई लोगों को संख्या लगातार बढ़ रही है, वे अंग्रेजों को भविष्य में सत्ता से बाहर कर सकते हैं। यद्यपि अंग्रेजों का ऐसा सोचना निराधार था। नटाल में उस समय मताधिकार हेतु 21 वर्ष की आयु पूर्ण होनी चाहिए के साथ ही 50 पौंड अचल संपत्ति या 10 पोण्ड सालाना कर चुकाना की शर्तें तय थी।[3] स्पष्ट है कि उस समय बहुत कम एशियाई लोगों को मताधिकार प्राप्त था।

उस समय नटाल में ऐसे केवल 200 भारतीय थे जो मताधिकार की शर्तें पूरी करते थे।[4] भारतीयों की इतनी अल्प संख्या के बावजूद अंग्रेज भारतीयों सहित सभी एशियाई लोगों को मताधिकार से वंचित करना चाहते थे। 1893 में भारतीयों की संख्या को बढ़ा चढ़ा कर पेश करते हुए एक अंग्रेज अधिकारी ने लिखा, ''भारतीय मूल के लोग हमारे बीच में गंभीर होते जा रहे हैं, वे खरगोश की तरह फैल रहे हैं और यूरोपीय लोगों के लिए विध्वंसकारी हैं।[5] नटाल के गवर्नर ने तत्कालीन 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर कालोनीज' लार्ड रिपन को लिखा कि यदि एशियाई लोगों को मतदान से वंचित नहीं किया गया तो वे जल्द ही नटाल की राजनीति में वर्चस्व स्थापित कर लेंगे।[6]

उसकी प्रतिक्रिया फलस्वरूप भारतीयों सहित सभी एशियाई मूल के लोगों द्वारा इस मताधिकार से वंचित करने के प्रस्ताव का संगठित विरोध करने के लिए 1894 में 'नटाल इंडियन कांग्रेस' की स्थापना की गयी। गाँधी जी इस संगठन के सचिव चुने गए।[7] गाँधी जी ने इस विरोध को एक जन आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया गया। गाँधी जी ने इसके विरोध को एक आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया गया। गाँधी जी ने इसके विरोध में प्रतिवेदन लिखे तथा ब्रिटेन के उच्चाधिकारियों को प्रेषित किया ताकि उन्हें समझाया जा सके कि नटाल के अंग्रेजों द्वारा

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

जतायी जा रही आशंका निर्मूल है। गाँधी जी ने विरोध स्वरूप पत्र–पत्रिकाओं में जनमत निर्माण हेतु लेख लिखे। फलस्वरूप नटाल के सभी यूरोपीय गाँधी जी को अपना दुश्मन मानने लगे। गाँधी जी को ''वेतन भोगी आन्दोलनकारी''[8] कहा गया। गोरों ने कहा कि यदि सभी भारतीयों को मतदान के अधिकार से वंचित नहीं किया गया तो सन् 1900 ई0 के दशक की शुरूआत में शायद या यह कहे कि निश्चित ही हम नटाल में ऐसी सरकार पाएंगें–

प्रधानमंत्री	–	अली बेनधारी
उप निवेश सचिव	–	दोस्त मौहम्मद
अटार्नी जनरल	–	सईद मौहम्मद
खजाँची	–	रामास्वामी

इसके अलावा सर्वोच्च न्यायालय और अन्य न्यायालयों में गाँधी को मुख्य न्यायाधीश के रूप में पाएंगे और अन्य लंबे एवं सफेद चोगा वाले व्यक्तियों को न्यायाधीश के तौर पर जिन्हें गाँधी हिन्दुस्तान से बुला लेंगे और ऐसा ही अन्य सभी सार्वजनिक विभागों में होगा . . .।[9]

गाँधी जी ने तर्कों एवं साक्ष्यों के साथ भारतीयों का पक्ष प्रस्तुत किया। गाँधी जी ने तर्क दिया कि तत्कालीन नटाल में 10000 मताधिकार सम्पन्न व्यक्तियों में से सिर्फ 251 भारतीय ही मताधिकार सम्पन्न थे।[10] अतः भारतीयों द्वारा राजनीतिक सत्ता को हस्तगत करने की आशंका नितान्त निर्मूल है। नटाल इंडियन कांग्रेस के आन्दोलन में फूट डालने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने कहा कि ''कुछ एक हिन्दुस्तानी लोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं और ये कुछ एक आंदोलनकारी मुस्लिम हैं और अपने अतीत के अनुभवों से हिन्दुओं को सीखना चाहिए कि मुस्लिम शासन उनके (हिन्दुओं) के लिए विनाशकारी होगा। गाँधी जी ने अंग्रेजों के इस विभाजनकारी सोच का जवाब देते हुए लिखा कि यह नटाल में हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ लड़ाने की एक शरारती कोशिश है। जहाँ पर दोनों ही समुदाय सबसे ज्यादा अमन और भाईचारे के साथ रह रहे हैं।[11] इस प्रकार गाँधी जी अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के विरूद्ध किए जा रहे सभी प्रकार के दुष्प्रचार का तथ्यात्मक एवं तार्किक खंडन कर रहे थे।

इसी दौरान 1896 में गाँधी जी कुछ समय के लिए भारत आते हैं। भारत आते समय गाँधी जी भारतीयों के नाम एक पत्र में अफ्रीका की चिन्ताजनक स्थिति के बारे में बताते हैं तथा इसके समाधान के रूप में लिखते हैं: नटाल में हमें घृणा को प्यार से जीतना है। हम नहीं चाहते कि दोषी को सजा मिले और हमें संतोष हो। . . . हम मूल कारणों को समाप्त करना चाहते हैं।[12] गाँधी जी ने मृत्यु पर्यन्त सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन हेतु सदैव ही इन शब्दों के अनुसार आचरण किया तथा सभी को इसी पथ पर चलने की प्रेरणा दी।

भारत से नवम्बर 1896 में डरबन के लिए अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी एवं बच्चों के साथ वापिस रवाना हुए। दिसम्बर 1896 में गाँधी जी को ले जाने वाला जहाज, 'एस0एस0 कौरनेण्ड' एवं एक दूसरा जहाज 'नादेरी' दक्षिण अफ्रीकी तट के नजदीक पहुँचा। तट पर अंग्रेजों को जब यह मालूम हुआ कि जहाज पर गाँधी जी भी बच्चों सहित सवार हैं तो तीव्र विरोध द्वारा गाँधी जी को वापस भेजने का माहौल बनाया गया। 20 दिन तक जहाज समुन्द्र में खड़े रहे। अंग्रेजों ने जाँच के नये–नये बहाने बनाए लेकिन अन्ततः 12 जनवरी 1897 को भारतीयों को उतरने की इजाजत मिली। गाँधी जी को रात के समय नटाल में प्रवेश करने की सलाह दी गयी लेकिन गाँधी जी ने चोरों की तरह नटाल में प्रवेश करने से इंकार कर दिया। 'बा' एवं बच्चों को सभी के साथ ही नटाल में भेज दिया गया था। गाँधी जी साँय 5 बजे के आस–पास जहाज से उतरकर तट पर आए। उनके साथ डरबन के सालिसीटर एफ0ए0 लाफ्टन भी थे। कुछ गोरे लड़कों ने गाँधी जी को देख लिया तथा वे गाँधी को गालियाँ देते हुए पीछा करने लगे, अन्य अंग्रेज भी भीड़ के रूप में पीछा करने लगे। अन्ततः शिफ्स हॉटल के पास गाँधी जी पर अंग्रेज भीड़ द्वारा हमला कर दिया गया। गाँधी जी पर लात, जूतों की बरसात की गयी, उन पर कीचड़ एवं सड़ी मछली फैंकी गयी, चाबुक भी बरसाये गए, उनकी टोपी उछाल दी गयी। गाँधी जी को बुरी तरह पीटा गया लेकिन वे झुके नहीं। उनकी गर्दन के नीचे से खून बह रहा था लेकिन चश्मदीदों के अनुसार गाँधी जी डटकर खड़े रहे और उस जान लेवा हमले के बीच तनिक भी नहीं घबराए। उन्हें हमले से डरबन के एस0पी0 की पत्नी ने अपनी छतरी की छडी से बचाया। कुछ समय बाद एस0पी0 भी घटना स्थल पर पहुँच गए।[13]

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

काफी जद्दोजहद के पश्चात् गाँधी जी को सुरक्षित घर पहुँचाया जा सका। डरबन में समुन्द्र के किनारे हुए हमले से साढे तीन साल पहले नटाल की राजधानी पीटरमैरिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर गाँधी जी को एक प्रथम श्रेणी के रेलवे डिब्बे से अंग्रेज युवक द्वारा बाहर फैंक दिया गया था लेकिन उन्हें कोई शारीरिक चोट नहीं आयी थी। डरबन में वे सामूहिक नस्लीय घृणा एवं भेदभाव का शिकार हुए थे लेकिन गाँधी जी इसके विरूद्ध अडिग रहे। परिणामस्वरूप मतदान से वंचित करने वाले प्रस्ताव के स्थान पर 1897 में तीन कानून बनाये गए जिसमें भारतीयों का जिक्र नहीं किया गया था। तत्पश्चात् गाँधी जी ने अफ्रीका के दूसरे प्रांत ट्रासंवाल में 'पंजीकरण एक्ट' के विरूद्ध 1906 में सफल 'सिविल नाफरमानी' अभियान चलाया। स्पष्ट है कि गाँधी जी के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनायी गयी। तकनीकों, विचारों एवं सिद्धान्तों को दक्षिणी अफ्रीका की भूमि पर परखा गया था, तभी वे भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध सफल अहिंसक आन्दोलन चला पाए। आज पूरी दुनिया में गाँधी को 'शांति का अग्रदूत' माना जाता है जो कि उनकी सार्थकता को प्रतिबिंबित करता है।

गाँधी जी में सामुदायिकता, सार्वभौमिकता की भावना, धार्मिक सामंजस्य की भावना, शासक वर्ग के प्रति कटुता का न होना एवं महिला शक्ति में विश्वास जैसे उदात्त आदर्श दक्षिण अफ्रीका की धरती पर संघर्ष करते हुए ही प्राप्त हुए थे। दक्षिण अफ्रीका में ही गाँधी जी ने सार्वभौमिकता की अपनी भावना को खुले रूप में व्यक्त किया था। यह भावना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार की थी। गाँधी जी मुस्लिम व्यापारियों के बुलावे पर दक्षिण अफ्रीका गये थे। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के सहयोगी मित्र, यहूदी, ईसाई एवं पारसी धर्म को मानने वाले अधिक थे। सामाजिक भावना के द्वारा गांधी जी मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले व्यापारियों, फेरी वालों एवं मजदूरों के साथ गाँधी जी घुलेमिल गए थे। भाषा की विविधता के प्रति गाँधी जी की समझ भी दक्षिण अफ्रीका में ही विकसित हुई थी। दक्षिण अफ्रीका में रह रहे गरीब भारतीयों में ज्यादातर तमिल भाषी थे, जो भाषायी भिन्नता के बावजूद गाँधी जी का प्रमुख आधार थे। धर्म को लेकर गाँधी की सार्वभौमिकता को गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका में मित्र एवं सहयोगी पोलाक ने इस रूप में प्रकट किया है–

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

उनके (गाँधी के) लिए धर्म का अर्थ है सभी को गले लगाने की सहिष्णुता, इसका पहला गुण है उदारता। जन्म से हिन्दू होते हुए भी वे सभी धर्मों के लोगों मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, कन्फ्यूशियस मत मानने वालों को अपना आध्यात्मिक भाई–बन्धु मानते हैं। वे उनमें कोई अन्तर नहीं मानते, उनका मानना था कि सभी धर्म मोक्ष की ओर ले जाते हैं, सभी ईश्वर को देखने के मार्ग हैं और जहाँ तक एक–दूसरे से संबंध का सवाल है, लोग पहले मनुष्य हैं और किसी सम्प्रदाय के अनुयायी बाद में, इसलिए सभी धर्मों के या किसी भी धर्म को नहीं मानने वाले लोग उनके समर्पित मित्र, प्रशंसक और सहायक हैं।[14] गाँधी जी की इस धार्मिक सार्वभौमिकता की बहुधर्मी भारतीय समाज में सार्थकता समीचीन प्रतीत होती है।

शासक वर्ग के प्रति उनके मन में कटुता न होना गाँधी को सही अर्थों में संत का दर्जा देता है। जब डरबन में उन पर अंग्रेजों की एक भीड़ ने हमला किया था तो गाँधी ने उस भीड़ को याद नहीं रखा अपितु उन्हें याद रखा जो उनके साथ खड़े थे। भारतीय को लिखे पत्र (पूर्व में उल्लेखित) में भी उन्होंने लिखा था . . . नटाल में हमें घृणा को प्यार से जीतना है। हम नहीं चाहते कि दोषी को सजा मिले और हमें संतोष हो . . .। ट्रासंवाल एवं नाटाल में बोअर एवं अंग्रेजों के द्वारा सालों तक उत्पीड़न और निन्दा भी उन्हें मानव स्वाभाव चाहे वो भूरी त्वचा के हो या श्वेत त्वचा की एकता के हो, कोशिशों से डिगा नहीं सकें।

महिला शक्ति के संदर्भ में गाँधी जी के विचारों को उदार बनाने वाली दक्षिण अफ्रीका में उनकी सेकेट्री सोन्जा श्लेजिन थी। श्लेजिन ने एक प्रतिष्ठित पुरूष राजनीतिज्ञ को सलाह दी थी कि 'जब तक वह महिला पार्षदों की बात मानता रहेगा, हर चीज ठीक रहेगी।' ऐसे उद्धात्त विचारों वाली सोन्जा गाँधी जी से महिलाओं की सहभागिता को लेकर तर्क करती थी। गाँधी जी के मित्र पोलाक की पत्नी मिली पोलाक की स्वतन्त्र सोच ने भी गाँधी जी को प्रभावित किया था। यूरोपीय महिलाओं द्वारा गाँधी पर पडे इस प्रभाव को जोहांसबर्ग की तमिल महिलाओं ने निर्णायक रूप से बढ़ा दिया था। इन्होंने गाँधी के शुरूआती सत्याग्रहों को निःस्वार्थ भाव से समर्थन किया था और सन् 1913–14 के अन्तिम सत्याग्रह में निडरता से साथ दिया था।

सार रूप में गाँधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में स्थापित किए 'फीनिक्स' और 'टॉल्सटाय' की बस्तिया ऐसा मिलन स्थल थी, सभ्यताओं की ऐसी प्रयोगशाला थी, जहाँ के रहने वाले

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

साथ–साथ रहते थे और निःस्वार्थ परिश्रम करते थे। इन बस्तियों के रहने वालों की सामाजिक, धार्मिक, भौगोलिक भिन्नताएँ महत्वहीन और अप्रासंगिक हो गयी थी और इस महत्वहीन व अप्रसांसगिक होने में ही गाँधी जी के महात्मा होने की सार्थकता निहित थी।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January – March 2017

सन्दर्भ सूची

1 फ्रैंच, पैट्रिक, आजादी या मौत : आजादी से विभाजन की ओर, पेंगुइन बुक्स, दिल्ली, 2012, पृ0सं0 21

2 वही, पृ0सं0 23

3 गुहा, रामचन्द्र, गांधी भारत से पहले, शुरूआती जीवन और राजनीतिक सफर, पेंगुइन, दिल्ली, 2015, पृ0सं0 68

4 वही, पृ0सं0 68

5 स्वेन्सन, एम0 डब्ल्यू, द एशियाटिक मैन्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ अफ्रीकन हिस्टोरिकल स्टडीज, 16 : 3, पृ0सं0 411

6 गुहा, वही, पृ0सं0 71

7 वही, पृ0सं0 72

8 वही, पृ0सं0 68

9 बेकर, ए0 डब्ल्यू, ग्रेस ट्रिम्फेट द लाइफ स्टोरी ऑफ ए कारपेन्टर, पिकरिंग एण्ड इंग्लिश, लन्दन, 1934, पृ0सं0 84–86

10 गुहा, पूर्वोक्त, पृ0सं0 94–95

11 गुहा, वही, पृ0सं0 95

12 वही, पृ0सं0 100

13 वही, पृ0सं0 117

14 पोलाक, एच0एस0एल0, पैसिव रेजिस्टेन्स इन साउथ अफ्रीका, रोड्स हाउस लाइब्रेरी आक्सफोर्ड, 1908–12, पृ0सं0 105, 109–110